Date - 18-04-2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. (I) Hons

Topic - Metaphysical theory (God Idea) of Charvaka.

Scanned with CamScanner

ईश्वर- विचार

चार्वाक ईश्वर की सत्ता का खंडन करते हैं क्योंकि यह प्रत्यक्ष से प्रमाणित नहीं है। चार्वाक अनुमान का शब्द के आधार पर भी ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि के प्रयासों का खण्डन करते हैं क्योंकि अनुमान और शब्द प्रमाण नहीं है।

सामान्यतः संसार के निमित्त कारण के रूप में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है। इसके विपरीत चार्वाक का कहना

Scanned with CamScanner

है कि जड़ तत्व अपने - अपने स्वभाव के अनुसार ही संयुक्त होते हैं और उनके स्वतः सम्मिश्रण से संसार की उत्पत्ति होती है। इसलिए चार्वाक मत स्वभाववाद कहलाता है। पुनः चार्वाक मत के अनुसार संसार की उत्पत्ति किसी प्रयोजन साधन के लिए नहीं हुई। संसार तो जड़ तत्वों के आकस्मिक संयोग का परिणाम है। इसलिए चार्वाक मत को यदृच्छावाद भी कहा जाता है।

चार्वाक का नीतिकवाद नैतिक क्षेत्र में सुखवाद की ओर ले जाता है। जब ईश्वर, आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म, कर्म सिद्धान्त सभी काल्पनिक हैं तब फिर यह संसार और वर्तमान जीवन ही व्यक्ति के लिए शेष बचता है। धर्म और मोक्ष चार्वाक को मान्य नहीं है। काम ही एकमात्र पुरुषार्थ है और अर्थ काम प्राप्ति का साधन। अतः व्यक्ति को अर्थ और काम के लिए ही प्रयत्न करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

स्वर्ग - नरक

स्वर्ग - नरक वह पारलौकिक स्थान है जहाँ आत्मा अपने किये गये कर्मों का फल प्राप्त करती है। चार्वाक मतानुसार यदि स्वर्ग - नरक वास्तविक सत्तारूं है तो फिर इनका प्रत्यक्ष होना चाहिए। परंतु ऐसा नहीं होता। अतः इनकी सत्ता में विश्वास करने का आधार नहीं है।

स्वर्ग और नरक की अवधारणा नित्यात्मा, पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास पर आधारित है। चार्वाक इनका खण्डन करता है। परिणामस्वरूप वह स्वर्ग - नरक के भी अस्तित्व को नकारता है।

आलोचना

1. ईश्वरवादियों का मानना है कि जड़तत्व सृष्टि का उपादान कारण तो हो सकता है परन्तु सृष्टि के इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए निमित्त कारण का होना आवश्यक है।

2. यदि चेतना जीवित शरीर का गुण है तो उसे शरीर से अविशेष्य रहना चाहिए तथा उसे जीवन पर्यन्त उसके साथ सम्बद्ध होना चाहिए। लेकिन मूर्च्छा, बेहोशी आदि में जीवित शरीर में चैतन्य

Scanned with CamScanner

की अभिव्यक्ति नहीं होती।

3. जड़-तत्व और चैतन्य एक दूसरे से स्वभावत: और स्पष्टत: भिन्न हैं। ऐसे जड़ तत्व से चैतन्य की उत्पत्ति का अर्थ है असत् से सत की उत्पत्ति किंतु असत् से सत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

4. चार्वाक आत्मा और ईश्वर की सत्ता का खंडन करने में तर्कत: सफल नहीं हो पाते हैं। यहाँ इनके खण्डन में चार्वाक प्रत्यक्ष की सीमा का अतिक्रमण करते हैं। वे आत्मा और ईश्वर का प्रत्यक्ष न होने के कारण उनके अभाव का अनुमान कर लेते हैं। जो चार्वाक के ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण के विपरीत है।

<u>निष्कर्ष</u> उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चार्वाक अपने प्रमाण विचार के अनुरूप तत्व विचार की व्याख्या करने में तार्किक रूप से सफल प्रतीत नहीं होते हैं। फिर भी भारतीय दर्शन में इनकी महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इन्होंने भारतीय दर्शन को रूढ़िवादी एवं अंधविश्वासी होने से बचाया।